SEM-3, Se-302, By-Dr. Shyam Bihari Choudhary

TOPIC- WATER POLLUTION

Date 29.10.2020
Page 2

जल प्रदूषण

यह प्रदूषण कभी मन्द प्रक्रिया के रूप में ज्वालामुखी क्रिया प्रमुख है। वर्षा होने पर ज्वालामुखी उद्गार से निकली धूल, राख व अन्य गैसों के मिलने से दलदली रूप में पानी बरसता है, जो कि वनस्पति व जीवों के लिए हानिकारक होता है।

मृदा अपरदन से भी जल प्रदूषित होता है, रेत, चीका व खनिज पदार्थ जल में मिल जाते हैं। जल में निलम्बित अवस्था में रहने वाले ठोस पदार्थों के कारण सूर्य प्रकाश जलराशियों के पेंदे तक नहीं पहुंच पाता है, जिससे जलीय जीव प्रभावित होते हैं। मृदा के जल में मिलने से इसके रंग, स्वाद व गुणवत्ता में परिवर्तन आ जाता है। प्रवाहित जल के मार्ग में आने वाली चट्टानों के घुलनशील पदार्थ जल में मिल जाते हैं। इनमें अनेक रसायन हानिकारक होते हैं जैसे आर्सेनिक। यह एक प्रकार का विष होता है। भूमिगत जल में मिल जाता है। हमारे देश में बिहार व पश्चिम बंगाल के अनेक स्थानों पर जल में आर्सेनिक की समस्या है।

मृत पादप तथा जन्तु भी जल को प्रदूषित करते हैं। अत्यधिक मात्रा में होने पर जलीय वनस्पति भी प्रदूषण का कारण बन जाती है। प्राकृतिक स्रोतों से जल में मिलते वाले विभिन्न पदार्थों की मात्रा यदि अधिक नहीं होती है तो जल में प्राकृतिक रूप से शुद्ध होने की क्रिया के कारण कुछ समय बाद जल स्वतः ठीक हो जाता है।